an>

Title: Need to undertake research work for rejuvenation of mythological river Saraswati.

कर्नल सोनाराम चौधरी (बाड़मेर) ः प्राचीन नदी सरस्वती जो वर्षों पहले लुप्त हो चुकी थी लेकिन पिछले कुछ सालों में इस नदी के जमीन के अंदर ही अंदर प्रवाहित होने के सुराग विभिन्न इलाकों में मिले हैं। भूजल वैज्ञानिकों के अनुसार इस नदी का बहाव स्थल हरियाणा से शुरू होकर गंगानगर, हनुमानगढ़ होते हुए पाकिस्तान में गया हुआ है और सिंधु नदी के सहारे चलती है और फिर पाक सीमा से लगे जैसलमेर जिले के किशनगढ़ क्षेत्र से यह नदी अंदर ही अंदर भारत में प्रवेश करती है। इन्हीं इलाकों में जैसे किशनगढ़, धरमी कुंआ, रणऊ एवं कुरिया गांवों में इस प्रकार के कई सुराग मिलते हैं। गौरतलब है कि गत कुछ महीनों से नाचना क्षेत्र के कई ट्यूबवैल से पानी अपने आप ही जमीन से बाहर निकल रहा है। अनुभवी एवं स्थानीय लोगों द्वारा कयास यही लगाये जा रहे हैं कि यह भूमिगत प्रवाहित सरस्वती नदी का ही पानी है। चूंकि इस नदी का उद्गम स्थल हरियाणा रहा है और हरियाणा सरकार द्वारा इसकी खोज संबंधित विषय पर कार्य भी किया जा रहा है। केंद्र सरकार के भूजल विभाग को अपने अनुसंधान में एक दशक पहले सीमावर्ती इलाके में सरस्वती नदी के सुराग मिल चुके हैं। सरस्वती नदी अनुसंधान संस्थान का गठन किये जाने की मांग समय-समय पर होती रही है। अम्बाला से माननीय सदस्य द्वारा 12.08.2014 को इस मुद्दे को सरकार के ध्यान में लाया गया था। परंतु इस योजना पर कार्य बहुत ही धीमा चल रहा है। 03 अप्रैल, 2014 को कुरूक्षेत्र में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा घोषणा भी की गयी थी कि आदि बद्री से कच्छ तक इसकी रिवाइवल के लिए काम करूंगा। राजस्थान सरकार की माननीया मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे जी ने इस संबंध में PHED मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी के माध्यम से माननीया केन्द्रीय मंत्री उमा भारती जी को दिनांक 16.02.2015 को DPR प्रस्तुत करते हुए 2015-16 में 1704.36 लाख रूपये, 2016-17 में 2118.93 लाख रूपये, 2017-18 में 2257.84 एवं 2018-19 में 786.38 लाख रूपये की राशि आवंटन करने का अनुरोध पत्र भी भिजवाया है ताकि इस दिशा में समय पर कार्य किया जा सके।

मेरा निवेदन यह है कि यदि सरस्वती की खोज पर रूचि लेकर कार्य को गति प्रदान की जाती है तो प्राचीन संस्कृति का संरक्षण होगा, वर्षों से तरस रहे सीमावर्ती क्षेत्र के लोगों को पवित्र एवं मीठा पानी पीने को मिल जायेगा। साथ ही पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। जिससे देश को विदेशी मुद्रा भी मिलेगी। आवश्यकता एवं जनता की मांग को ध्यान मे रखते हुए सरस्वती नदी अनुसंधान एवं इससे संबंधित सभी योजनाओं पर प्राथमिकता से ध्यान देकर कार्य किया ही जाना चाहिए।